B.A. History Part: I (Sub/Gen)
Paper: I, Unit: I, Date: Lecture No.: 11
9.10.2020

Lession: हड़प्पाकालीन सभ्यता

नील नदी घाटी में मिस्र की सभ्यता, दजला-फरात नदी घाटियों में मेसोपोटामिया की सभ्यता और ह्वांग हो नदी घाटी में चीन की सभ्यता के उदय की भाँति भारतीय प्रायद्वीप के सिन्धु और उसकी सहायक नदियों की घाटी में लगभग 3600-3400 ई०पू० के बीच सैन्धव सभ्यता का उदय भारत के लिए गौरव की बात है। विकसित नगर निर्माण योजना नगरों की घेराबन्दी, मनभावन मूर्ति एवं अंकन कला लेखन कला, संगीत कला, उत्कृष्ट मृद्भांड कला आदि इस सभ्यता की खास विशेषताएँ थीं जिसके कारण इसे प्राचीन विश्व की एक महान सभ्यता माना जाता है। चूँकि सिन्धु घाटी सभ्यता की पहली खोज हड़प्पा नामक स्थान पर मिले नगर के पुरावशेषों के उत्खनन के द्वारा की गई अतः इसे हड़प्पा सभ्यता कहते हैं। हड़प्पा सभ्यता की खोज की कहानी अत्यंत ही रोमांचक है, जिसने भारत का इतिहास ही बदल डाला। अतः हड़प्पा सभ्यता के खोज का वर्णन अपेक्षित होगा।

इस सभ्यता का पहला प्रमाण हड़प्पा नामक स्थान पर फैले हुए विशाल टीलों से उस समय प्राप्त हुआ जब लाहौर-कराची रेलवे लाइन बिछाने के लिए खुदाई हुई और इस स्थान से ईंटों के टुकड़े प्राप्त किए गए। हालांकि इस स्थान के बारे में 1826 ई० में चार्ल्स मासिमैन नामक पुराविद ने लिखा था लेकिन कोई पुरातात्विक कार्य नहीं हुआ। रेलवे लाइन के लिए खुदाई के क्रम में प्राप्त ईंटों और अन्य पुरासामग्रियों को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रमुख जनरल एलेक्जेंडर कनिंघम के पास भेजा गया। कनिंघम को ये पुरासामग्रियाँ इतनी महत्वपूर्ण लगीं कि उसने स्वयं 1856 ई० में हड़प्पा और इसके आसपास के पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया और यहाँ एक महान सभ्यता के अवशेष का अंदाज लगाया। 1921 ई० में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक सर जान मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के तट पर स्थित टीलों का पुनर्निरीक्षण किया जिसके परिणामस्वरूप इन टीलों में दबी हुई महत्वपूर्ण पुरासामग्रियों की महत्ता का पता चला। अगले वर्ष 1922 ई० में राखालदास बनर्जी ने एक दूसरे महत्वपूर्ण पुरास्थल का पता लगाया, जो सिन्धु घाटी में ही अवस्थित था। यह मोहनजोदड़ो था जहाँ 1922 से 1930 ई० तक जान मार्शल, के. एन. दीक्षित, एर्न. हरग्रीव्स, सनाउल्ला आदि महान पुरातत्ववेत्ताओं की देख-रेख में बड़े पैमाने पर खुदाई का कार्य किया गया। 1931 में अर्नेस्ट मैके ने खुदाई के कार्य को आगे बढ़ाया। मार्टिमर ह्वीलर ने 1946 में खुदाई के क्रम में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा नगरों के नगर निर्माण योजना का पता लगाया।

इस सभ्यता के प्रसार को जानने के लिए कई अन्य पुरातत्ववेत्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। नानिगोपाल

मजूमदार और आर. एल. स्टाइन ने ऐसे कई नए स्थलों का पता लगाया जो हड़प्पा सभ्यता के ही नगर थे। इनके अतिरिक्त ई. जे. एच. मैके, आर. डी. बनर्जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त पुराविदों के योगदान से उस हड़प्पा सभ्यता की खोज संभव हुई, जिसका विस्तार सिंध, बलूचिस्तान और पंजाब से लेकर जम्मू-कश्मीर हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, और उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों तक हुआ था।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर